किसानों का बिगुल

प्रार्थना

दोहा

मंगलमय दातार तू जगपति जगदाधार।
जो कछु दे, तो दे यही, करूँ कृषक-उद्धार॥

गजल-कव्वाली

ईश्वर ! मेरा ये तन-मन कृषिकार के लिए हो।
सर्वस्व मेरा इनके उपकार के लिए हो॥ १ ॥
व्रत, नेम, ध्यान मेरा, सन्ध्या, भजन व पूजा।
सब धर्म कर्म इनके उद्धार के लिए हो॥ २ ॥
विद्या, सुमन्त्र जो कुछ व्यवहार-ज्ञान मेरा।
इनकी कलह, कुमति के उपचार के लिए हो॥ ३ ॥
भावुक-विशुद्धता जो सौजन्य, शील मेरा।
आपस मे प्रेम-भक्ती-संचार के लिए हो॥ ४ ॥
मेरा जो कर्म-कौशल, साहस व शूरताई,
रक्षक सदैव इनके अधिकार के लिए हो॥ ५ ॥

'निर्भय' मगन रहूँ नित करके किसान-सेवा।
निष्काम-काम मेरा संसार के लिए हो ॥ ६ ॥

---

(२)

उलाहना

सवैया

हम दीन मलीन औ हीन भए
छिनि दूर गई सबरी प्रभुताई।
'बदनाम गुलाम हरामी' बने
पर-राज की गाज महा दुखदाई ॥
'निरभै' निशि-बासर टेरयो करै
करुणाकर को करुणा नहिं आई ॥
कहा जानि हैं पीर वे औरन की
ज़िनके नहि फाटी हैं पाँव बिंवाई ॥ १ ॥
आरत भारी पुकारत हैं,
तुम तारत हो हमने सुन पाई।
आप पै भीर परी न कबौं परि
जानि हौ का पुनि पीर पराई ॥
याही से नाहिं सुनो 'निरभीक' की
साँचु ही जान लई निठुराई।

जानत पीर न औरन की
जिहि के नहिं फाटी है पाँव बिवाई ॥ २ ॥

दोहा

दीनबन्धु ! करुणानिधे ! विपति-विदारन-हार ।
का हमरे ही भाग्य में बदे सकल दुख-भार ?

---

(३)

किसान की आन

रसिया

कब तक बने रहेंगे हम ही, जग में दुखिया दीन किसान ॥ टेक ॥
और देश के तो किसान सब भोगत स्वर्ग महान ।
हम ही जनमे जा भारत में दुख-दारिद की खान ॥१॥ कब तक०
काहु दिन हमहीं हते विश्व मे 'धनपति विद्यावान ।'
अब तो 'काले कुली हरामी पाजी वेईमान' ॥२॥ कब तक०
दुनिया भर के हम शासक थे न्यायी, नीति-निधान ।
पड़े गुलामी में दुख भोगें ऊकैं सकल जहान ॥३॥ कब तक०
पूँजीपति, हुक्काम मौजते खूब बनावत शान ।
हम ही दीखत लटी नारि कं चाहि सो मसकत आन ॥४॥ कब तक०
योंही भींकत रहे जनम भरि तौ न होहि कल्यान ।
करि संगठन उठेंगे जब हम हैं जाहिं सब के कान ॥५॥ कब तक०

सहि-सहि अत्याचार-उठे जब जगके वीर-किसान ।
अत्याचार और दुक्खनु को मिटि गयो सर्व निशान ॥६॥ कब तक०
'निर्भय' हम हू दिखला देंगे अब अपने अरमान ।
कै तो सुखी स्वतंत्र रहेंगे कै होंगे बलिदान ॥७॥ कब तक०

---

(४)

ईश्वर से प्रार्थना

सवैया

दीन-दशा दिन पै दिन दावति
दौरि कें दारिद साज संजोए ।
राति दिना चित चिन्त रहे
जासों कंचन सौ तन माटी मिलोए ॥
बारहि बार निहोरे करे
करुणा-निधि पै अपनो दुख रोए ।
पै 'निरभै' की सुनी नहिं एकहु
काननु दै अँगुरी कित सोए ॥ १ ॥
लोक गयौ, परलोक गयौ, पर
शोक गयौ न, रह्यौ तन भोए ।
मान गयौ, ध्रुव-ध्यान गयौ
अपमान गयौ न, बड़े दुख ढोए ॥

देश गयौ, सुर-वेष गयौ पै
कलेश गयौ न, सबै धन खोए।
या 'निरभै' की सुनौ अबहू प्रभु !
कानतु दै अँगुरी कित सोए॥ २ ॥

'काले कुली औ गँवार' भए
'बदकार' भए नहि जात है जोए।
'पाजी, गुलाम, निकाम' भए,
बदनाम भए सब औगुन ढोए।
'जंगली, मूढ़, असभ्य' भए 'खलु
भीरु' भए 'नरभै' गुन खोए।
देश दशा प्रभु ऐसी भई तुम
कानतु दै अँगुरी कित सोए।

---

(५)

किसान—मोहन

गजल

किसान—ईश ! क्यों रूठे हो हम से जो यहाँ आते नहीं ?
हम किसानों की दशा पर तुम तरस लाते नहीं॥ १ ॥

मोहन—प्रिय किसानों को कभी भी भूल हम जाते नहीं।
हम न रूठें किन्तु हम पर तुम यकीं लाते नहीं॥ १ ॥

किसान—टीढ़ी, पाले रोज पड़ते ये, अकालों पर अकाल ।
पानी तुम में नहीं रहा क्या ? पानी बरसाते नहीं ॥ २ ॥

मोहन—फल तुम्हारे ही कुकरमों का, जो पड़ते हैं अकाल ।
तुम में पानी कुछ भी होता, ऐसे पछताते नहीं ॥ २ ॥

किसान—नित करोड़ो कट रही हैं तेरी वो ब्रज-नन्दिनी ।
इनको बचाने के लिए आकर के अपनाते नहीं ॥ ३ ॥

मोहन—स्वारथी, लोभी, निठुर हो तुम ही कटवाते उन्हे ।
आऊँगा लेकिन मुझे वे ग्वाल दिखलाते नहीं ॥ ३ ॥

किसान—जा रहा है सब हमारा धन विदेशों को बहा ।
इस ग़रीबी से बचें वो मन्त्र बतलाते नहीं ॥ ४ ॥

मोहन—लो न तुम चीजें विदेशी, धन रहे सब देश में ।
तुम ग़रीबी से बचो, क्यो चरखा चलवाते नहीं ॥ ४ ॥

किसान—रात-दिन करके भी मेहनत नंगे-भूखे मर रहे ।
सुध नहीं लेते हो अब क्या हम तुम्हें भाते नहीं ॥ ५ ॥

मोहन—वीर होकर मरना सीखो, फिर न भूखो से मरो ।
जीते-जी मुरदा बने जो, वे मुझे भाते नही ॥ ५ ॥

किसान—रात-दिन पिसते हैं हम तो जुल्मो अत्याचार से ।
ढूढ़ँते फिरते तुम्हें पर हम कहीं पाते नही ॥ ६ ॥

मोहन—स्वाभिमानी तुम बनो आँखें दिखावें कौन फिर ।
जानते बलिदान होना, क्यों मुझे पाते नहीं ॥ ६ ॥

किसान—लुट रहे हैं हर तरह से हम अनाथों की तरह ।

करने को रक्षा हमारी चक्र ले धाते नहीं ॥ ७ ॥

मोहन—मर्द हो कर लुट रहे हो ये मुझे अफसोस है ।

चाहते रक्षा तो क्यों कर्मण्यता लाते नहीं ॥ ७ ॥

किसान—ये विपत्ती याँ रहें यह हम न हरगिज चाहते ।

दिल से हम कहते हैं 'निर्भय' ये मगर जाते नहीं ॥ ८ ॥

मोहन—चाह से केवल कहीं होता न कोई काम है ।

'निर्भय' हो फटकार दो वे कौन जो जाते नहीं ॥ ८ ॥

---

(६)

भोले-किसान

कवित्त

देश घर-बार गयौ, भैया-परिवार गयौ

बनी सो बिगार गयौ बुद्धू की गुमानी में ।

हिन्दुन सों छुआछूत, ईसाई के खात जूत,

मियान के पूजें भूत, हद बुद्धिमानी मे ।

विधवा विचारी हाय ! घर सों निकारी गई,

औरन की नारी भई, खाक डारी ज्वानी में ।

आपनी हू भेनि-बेटी-रोटी की न रक्षा होति,

'निर्भय' जाते डूबि क्यों न चुल्लू भर पानी में ।

दोहा

किसान पीछे अकल के लिए फिरत है लट्ठ ।
हानि-लाभ सोचें नहीं करैं मरन के ठट्ठ ॥

गज़ल

भोले-भाले अकल के बुद्धू 'किसान' सब कुछ भुला रहे हो ।
सोके ग़फलत की नींद गहरी हा! मौत अपनी बुला रहे हो ॥१॥
तेरे दर पर लगा के फेरी सुनाते तुझको तेरे भले की ।
सुनने की भी न तुझको फुरसत ऐसी झपकी लगा रहे हो ॥२॥
दिन-दहाड़े ख़जाने लुट करके जा रहे हैं विराने घर को ।
अपने हाथों ही अपने घर को दे के अगनी जला रहे हो ॥३॥
पहनते हो विदेशी मलमल वो छींट, तंजेब, सूती अतलस ।
छोड़ि चरखा स्वदेशी-खद्दर अपनी पूँजी गँवा रहे हो ॥४॥
शोक ! आपस में लड़-झगड़ कर गँवाते पैसा अदालतों में ।
वकील, चपरासी, ऐलमद को बन के नादाँ लुटा रहे हो ॥५॥
सहते आये हो मुद्दतों से जुल्मों सख्ती सितम-सितम पर ।
जालिमों को ये जुल्म करना तुमही बुज़दिल सिखा रहे हो ॥६॥
खूँ-पसीना को एक करते हो तब भी रहते हो भूखे-नंगे ।
लूट ले जाते विलायती उनको मालिक बता रहे हो ॥७॥
तुम ही बोते हो, सींचते हो, तुम ही मालिक, जमी तुम्हारी ।
बन के बुद्धू कमाई अपनी लुटेरों को तुम लुटा रहे हो ॥८॥

इस तरह बरबाद होने का न तुमको ख्याल बिलकुल ।
इस तरह बेहोश होकर हस्ती अपनी अपना मिटा रहे हो ॥९॥
देख दुनिया की दौड़ सरपट कमर को कसलो ए तुमभी 'निर्भय' ।
गरजो इकमिल बहादुरी से तुमहीं शेरे जहाँ रहे हो ॥१०॥

---

(७)

किसानों की भूल

दोहा

सत्य-पन्थ चाल्यो नहीं, अब रोवै दुख पाय ।
जैसो कीनों भोगि तू, काहे को पछिताय ॥

रसिया

अपने कर्मन को फल भोगे मूरख काहे को पछिताय ॥टेक॥
मूरखता में ऐसो भोयौ—आपस में लड़ि-लड़ि सब खोयो ।
फ दूसरे की चुगली करि लीनों नास कराय ॥१॥अपने०
सहि-सहि अत्याचार अघाये—जालिम के बड़े रुतवा बढ़ाये ।
ऐसे दब्बू कायर ह्वै गये, बात कहौ घिघियाय ॥२॥अपने०
दै-दै रिशवत अमला बिगारौ—अपनौ सब अधिकार बिसारौ ।
द्वै कौड़ी के चपरासी हु के कर जोरैं रिरियाय ॥३॥अपने०
पढ़िवौ-लिखवौ बिरथा जानौ—समझावै कोई एक न मानौ ।
दुनिया की कुछ खबर तुम्हें ना, अपनी रहे चलाय ॥४॥अपने०

ऐरे गैरेनु खूब खवाओ–'निर्भय' स्वराज्य में पाँउ न बढ़ाओ।
किसान-सभा के हू तुम मेम्बर अब लों बने हव नायँ ॥५॥अपने०

(८)

किसानों की लूट

वैरिनु भारी कुचालि चली,
घर फोरि कें गौरव तोरि दयौ है ।
नींद, कुबुद्धि, प्रमाद, हराम कौ,
भारी नशा नहिं होश रह्यो है ।
चोर, डकैत लगे ही रहे,
धन मौदुन कौ सब छीनि लयौ है।
बुद्धुनु सूझति ना 'निरभै'
इत लाखन को घर खाक भयौ है ॥

दोहा

चढ़े लुटेरे दल सहित, चहूँ दिशा सों टूटि ।
मूरखता की नींद में सब घर लीनों लूटि ॥

भजन

अब जागो रे कृषिकार हो सब घर उजड़ा जाता है ।टेक
कानून गो पटवारी लूटें—अमीन पेशेकारी लूटें ।
पतरौलहु करि ख्वारी लूटें
ऐलमद, ऐलकार हो, यह क्या अन्धेर खाता है ॥१॥अब जागोरे०

जमीदार कारिन्दा लूटे—बौहरे अरु छल-छन्दा लूटें।
थानेदार गरिन्दा लूटें
मुखिया नम्बरदार हो, कोई फरेब फैलाता है ॥२॥अब जागोरे०
कर महसूल अति लगान लूटें—टैक्स रमन्ना दुकान लूटें।
कोर्ट फीस बे प्रमान लूटें
चपरासी चौकीदार हो, कोई सिपाही सताता है ॥३॥अब जागोरे०
वकील और बैरिस्टर लूटें—कानूनी मुख्तत्तर लूटें।
रिशवत-खोर सिकत्तर लूटें
जो अमला मकार हो तुम्हें लूट-लूट खाता है ॥४॥अब जागोरे०
साटन, बुक बजारी लूटें—साड़ी सुघर किनारी लूटें।
विदेश के व्यापारी लूटें
चटक, मटक रँगदार हो, कोई नई बजै लाता है ॥५॥अब जागोरे०

---

(९)

घूस-खोर पटवारी

दोहा

तू कित में भूलौ फिरै झूठे गर्व गँवार।
तेरे कुकरम ही तुझे कर देंगे बिस्मार॥

रसिया

तेरे कर्मनु कौ मरोरा काहु दिन लै बैठेगो तोय ॥टेक॥

तू तौ जान मौज उड़ाइ रह्यो स्वारथ में रह्यो भोय ।
अरे अधरमी तू तौ अपनी रह्यौ आकवत खोय ॥१॥तेरे कर्मनु०

काहु शिकमी कौ खातौ बाँधै असली कों दे खोय ।
बिन जोते ही टीप करै जापै झूंठी नालिश होय ॥२॥तेरे कर्मनु०

मिलै तगाई तब तू मांगै फसलानौ हू ढोय ।
छूट मुल्तवी परचन हू पै अंटी लेतु टटोय ॥३॥तेरे कर्मनु०

आपस में तू हमें लड़ावै इत की उत में पोय ।
दोउ ओर ते खाइ हरामी देइ बीज विष बोय ॥४॥तेरे कर्मनु०

अफसर को खुश करिवे तेरी 'हाँजू-हाँजू' होय ।
झूंठी पैदावारी लिखि देइ हमकों धरि देइ धोय ॥५॥तेरे कर्मनु०

कलम कसाई होहि पटवारी दुनिया कहि रही रोय ।
नमकहरामी मिलि कैं मारै नैया देइ डुबोय ॥६॥तेरे कर्मनु०

जितनी तेरी देखी करनी उतनी भरि रहीं खोय ।
गरौ काटि कैं तू दीनन कौ हाथ मलैगो रोय ॥७॥तेरे कर्मनु०

पहले से अनजान रहे नहिं सम्हरे 'निर्भय' होय ।
छोड़ि कायरी करें संगठन सींगु दिखाइ दें तोय ॥८॥तेरे कर्मनु०

---

(१०)

धन की माया

दरिद्रता

कवित्त

छोड़े सुत बन्धु प्यारे हितू और नातेदार
पास नहिं आवैं पास जाए ते दुख्यावते ।
नारी हू विचारी नित रहित दुखारी भारी
होति अति ख्वारी वारे लाल दुख पावते ।
'आलसी, निकाम बिन दाम के हरामी' कहैं
'पांजी बेईमान' नर 'मूरख' बतावते ॥
सोचै 'निरभीक' यह जानी मैंने सांची बात
दारिद न होत तो न नाम ये धरावते ॥१॥

चन्दगी

कायर कुरूप होहि कूर औ कुटिल कामी
नामी बदनामी पावै रोगी महा गन्दगी ।
मूरख अजान महा सदा बेईमान रहा
और तो बतावें कहा नाहे शरमिन्दगी ।
एते हू पै होहि धनवान तो सुजान कहे
बुद्धि के-निधान कहे वाह तेरी जिन्दगी ।

कहै 'निरभीक' ठीक छानि यह जानी बात
देखी है जहान बीच 'चन्दगी' की बन्दगी ॥२॥

---

(११)

अत्याचारी बोहरे

दोहा

हम ही से धन लूटि के बने धनी सरदार ।
अब हम ही पर बोहरे करते अत्याचार ॥

भजन

बोहरे करते अत्याचार ।

हम ही से पूँजीपति बनकर करते दुर्व्यवहार ।
हम दीनों की जनम-कमाई जिनके सुख का सार ॥१॥बोहरे०
मनमानी लें ब्याज स्याज़ अरु लें गेहूँ दे ज्वार ।
लें बढ़ती, दें कम, दीनों को सब विधि करते ख्वार ॥१॥बोहरे०
अपने ऐशोअशरत में वे फूँकें हाल हज़ार ।
अन्न न मिलै पेट भरि हमको तन ते रहें उघार ॥३॥बोहरे०
बेईमान होंहि सुख भोगी हम रहे दुखी अपार ।
'निर्भय' इन धनिकों से कर दे कृषकों का उद्धार ॥४॥बोहरे०

दोहा

लोभी, लोलुप स्वारथी, दीननु करें तबाह ।
लै लूटा जो देश के सोइ कहावत साह ॥

रसिया

बौहरे है गए देश लुटेरा हम तो दीने गरद मिलाय ।

लैवे जाहिं तो पखवारे लौं घर पै लेतु फिराय ।

तब कहुँ बड़े मिजाजनु ते वे देखें निगाह उठाय ॥१॥बौहरे०

कम दें बढ़वो लेहिं निर्दयी उलटौ भाव लगाय ।

सरी-गरी चाहि होहि असैली देहिं एक ही भाय ॥२॥बौहरे०

पांच रुपैया दें पचास को कागदु लै लिखवाय ।

मनमानी वे डौढ़ी-दूनी ब्याज लेत लिखवाय ॥ ॥बौहरे०

भूखे-नंगे राति दिना करि लेहिं जो फसल कमाय ।

जम के से गन गिरैं बौहरे चारौ ओर ते आय ॥४॥बौहरे०

राशि होत ही खरियान ही मे सबरी लेतु तुलाय ।

भुस कांकस जे कछू न छोड़ें लै जाहि सबै ढुवाय ॥५॥बौहरे०

पेट ब धि के बरस दिना ते सब घरु रह्यौ कमाय ।

इतने हू दाने नहिं छोड़े एक दिना लें खाय ॥६॥बौहरे०

फिरि हिसाब करि औने-पौने ब्याज पै ब्याज लगाय ।

इतने जोरें सात जनम हू हम ना सकें चुकाय ॥६॥बौहरे०

लै लूटा तो साह बने हैं 'निरभै' मौज उड़ाय ।

'साम्यवाद' होहि भारत में तब सब मालुम परि जाय ॥८॥बौहरे०

---

(१२)

बैलों की पुकार

दोहा

दें किसान को सर्व सुख महनत करें अपार ।
परि हम ही को सुख नहीं, रूठि रह्यो करतार ॥

रसिया

सबरे काम करें मालिक के हम पै क्यों रूठे करतार ।
रात-दिना हम लगे रहे तौउ मालिक करे न प्यार ।
बड़े-बड़े दुख देहि निर्दयी कर देहि माटी ख्वार ॥१॥सबरे०
भैंसिनु कूँ तो बाट बनौरे सानी दै दै चार ।
हमें अभागेनु तो भरि-पेट हू सूखो मिलै न न्यार ॥२॥सबरे०
कीच-खाँच मे डरे रहत हैं सूखीऊ करैं न सार ।
जाड़ेनु मे हम थर-थर काँपैं सीरी घुसि जाइ ब्यारि ॥३॥सबरे०
दुबले है जाहिं मारि-मारि के तोरि देत पसवारि ।
जेठ मास मे घर हू न बांधैं बाहर देत निकारि ॥४॥सबरे०
बूढ़े दुर्बल होहिं काम में जब हम जाते हार ।
बेचि कसाइन कों देहि निर्दयी हाल कटावत नारि ॥५॥सबरे०
जो जीवन आधार तुम्हारे तिन्हैं ही करो विस्मार ।
'निर्भय' फेरि कौन से ढंग ते करि लेउगे उद्धार ॥६॥सबरे०

(१३)

सब सुखी किसान दुखी

दोहा

तुम सब ही सुख ते रहो मारि बिराने माल ।
हम पृथिवी-पति फेरि हू रहते हैं कंगाल ।।

रसिया

तुम सब ही रहौ सुखारे—हम ही क्यों रहे दुखारे ।।टेक।।
हैट-बूट और सूट पहनते उड़े फिरो तुम मोटर में ।
बिस्कुट-चाय-शराब उड़ाते लगाते टोटल होटल में ।।
बाबूजी को चैन पड़े नहिं चैन-घड़ी बिन डारे ।।१।।तुम सब०
जन्डैल, कन्डैल, लाठि, कमिश्नर, जज, वकील बैरिस्टर हो ।
रायबहादुर, सी० आई० ई० शाहन्शाह मिनिस्टिर हो ।।
फूली-फूली खूब मारि रहे, है रहे तुम मतवारे ।।२।।तुम सब०
सेठी-साहूकार बने तुम, बड़े-बड़े घर बना लिये ।
अपने ऐश अरु अशरत में हाय लाख करोड़ों गँवा दिये ।।
है ग़रूर में चूर मगन हो बैठि मसन्द सहारे ।।३।।तुम सब०
सन्त-महन्त बनि संडे-मुंडे खूब उड़ावें गुल-छर्रें ।
रास-बिहार करे मन्दिर में रचे कमाई के ढर्रें ।।
लीडर मस्त लीडरी में हैं, हम ही लुटें बिचारे ।।४।।तुम सब०

तुम ही भोगौ भोग बिराने घर से मालामाल रहे ।
खून पसीना एक करें हम फिर हू हाय, कंगाल रहे ॥
अन्न के दाता सब के हम ही भूखे करें गुजारे ॥५॥तुम सब०
हम किसान हो जो न कमावें हैट-बूट सब धरे रहें ।
बने शाह जज लाटि बहादुर सेठ एक लंग परे रहे ॥
'निर्भय' फॉकत फिरौ धूरि सब मरौ भूख के मारे ॥६॥तुम सब०

---

(१४)

पूर्व काल में किसानों की दशा

(हिन्दू-सम्राट चन्द्रगुप्त के राज्य में)

दोहा

था जब भारतवर्ष में चन्द्रगुप्त सम्राट् ।
सदा किसानो को रहा, सुख-आनँद का ठाठ ॥

छन्द

एक यूनानी राजदूत था चन्द्रगुप्त का दरबारी ।
उसने उनके राज्य-काल को लिखी कैफियत है सारी ॥१॥
खेती-निस्बत हाल लिखा है उसने बड़ी बड़ाई का ।
सभी राज्य भर में था काफी बन्दोबस्त सिंचाई का ॥२॥

इस कारण सर्वत्र देश में कभी अकाल न होता था ।
दुख-दारिद्र समन्दर में कोई खाता कभी न गोता था ॥३॥
होते रहते युद्ध सदा ही फौजें आती जाती थीं ।
किन्तु किसानों की खेती में हानि न होने पाती थी ॥४॥
चन्द्रगुप्त के सुखद राज्य का बहुत बड़ा विस्तार रहा ।
न्याय नीति का सुख सुराज था सदा प्रजा पर प्यार रहा ॥५॥

मुगल-राज्य में

दोहा

अब से पहले कृषक सब, करते सुख से बास ।
और उठा के देख लो, मुगलों का इतिहास ॥

मुगलो के साम्राज्य-समय को लोग बुरा बतलाते हैं ।
किन्तु किसानों को कैसा था उसे भूल ही जाते हैं ॥ १ ॥
और ही और कारणो से जो मुगल-राज्य बदनाम रहा ।
उसी राज्य में कृषि-कारों को सब ही सुख-आराम रहा ॥ २ ॥
अब से लाख गुने सुख में थे सब इतिहास बताते हैं ।
उसी जमाने की कुछ बातें तुम को आज सुनाते हैं ॥ ३ ॥
अन्न, वस्त्र, घी, दूध सभी का सबको सदा सुकाल रहा ।
हिन्दू और मुगल-शासन में भारत मालो-माल रहा ॥ ४ ॥

बीस सेर का घी मिलता था खिलजीशाह-ज़माने में।
साढ़े सात सेर थी मिश्री आती सोलह आने में ॥ ५ ॥
औरंगज़ेबी में चावल रुपये के आठ मन आते थे।
लिखा आईन अकबरी में है गेहूँ चारि मन पाते थे ॥ ६ ॥
क्योंकि नेकनीयत रहती थी बादशाह दीवानों की।
सदा सोचते रहते थे वे उन्नति, वृद्धि किसानों की ॥ ७ ॥
खूब जानते थे कि प्रजा ही आश्रय राज धनी का है।
यही एक स्थायी ज़रिया शाही आमदनी का है ॥ ८ ॥

गज़ल

यह प्रान है हमारी प्यारी प्रजा हमारी।
सुत के समान पाले यह तो हैं जां हमारी ॥ १ ॥
ये ही है राज्य की जड़ आमद का खास ज़रिया
खुशहाल यह रहे तो पूरी नफा हमारी ॥ २ ॥
पाते हैं ऐशोअशरत रियाया ही की बदोलत
इसके ही बल पै रहती शौक़त जहाँ हमारी ॥ ३ ॥
पावे न यह मुसीबत यह फर्ज़ है हमारा
'निर्भय' सुखी रियाया रखना खुदा हमारी ॥ ४ ॥

दोहा

इसीलिए निज प्रजा की, करते थे परवाह।
सभी नौकरो पर सदा रखते कडी निगाह ॥

छन्द

जबकि नया दीवान मुक़र्रर हो सूबे में आता था।
बादशाह की सख्त हिदायत लिखी सनद में पाता था॥ ९॥

सबसे मुख्य तरक्की करना तुम खेती के कामों में।
प्रजा किसानों की आबादी खूब बढ़ाना गाँवों में॥ १०॥

करो हर तरह मदद और उत्साहित प्रजा हमारी को।
सच्चे दिल से करें तरक्की अपनी खेती-बारी को॥ ११॥

कोई किसान न कष्ट उठावे जुल्म अनीति मरोरों पर।
अत्याचार न करने पावे जोराबर कमजोरों पर॥ १२॥

सख्ती और तंगी न करो तुम कभी लगान वसूली में।
काबिल सजा गिने जाओगे थोड़ी हुक्मअदूली में॥ १३॥

अगर पुराना लगान बाकी किसानों पर रह जाता था।
शाहंशाह के हुक्म-मुताबिक तंगी कोई न पाता था॥ १४॥

आसानी से वसूल करना रखकर ख्याल रियाया का।
यानी पाँच फी सदी लेना तुम हर फसल बक़ाया का॥ १५॥

रुपये-पैसों में न मुकर्रर था लगान कृषिकारी का।
किन्तु लगान लिया जाता था हिस्सा पैदावारी का॥ १६॥

ऐसी सूरत में सरकारी,सब लगान चुक जाता था।
कृषिकारों पर प्रायः बकाया कभी न रहने पाता था॥ १७॥

अगर किसान न भी दे सकता था लगान जो सरकारी।
किया बेदखल नहीं जाता था, था कानून ऐसा जारी॥ १८॥

सुखी किसान सदा रहते थे खूब मुनाफा पाते थे।
अब के से भेज वसूली में वे तंग न किये जाते थे ॥ १९ ॥
अगर कभी गांवो में हो कर शाही फौज गुज़रती थी।
नुकसान किसानो के खेतों का रस्ते मे जो करती थी ॥ २० ॥
उसका तखमीना ठीक लगा उतना लगान कम लेते थे।
या हरजे की उसी वक्त ही रकम अदा कर देते थे ॥ २१ ॥

दोहा

कहते औरंगज़ेब को ज़ालिम आरु वद टेक।
किन्तु किसाना के लिए, था वह कैसा नेक ॥

छन्द

*सन् तिहत्तर में औरंगज़ेब ने इक फरमान निकाला था।
जिसमें चौअन चीज़ों पर महसूल माफ कर डाला था ॥ २२ ॥
यह भी थी ताकीद उसी मे शाही नौकर पेशो को।
सूबेदार. ज़मीदारो को नाजिम करद-नरेशों को ॥ २३ ॥
कृषिकारो से किसी किस्म की जब्रन कभी न की जावे।
भेट, घूस, वेगार नाजायज़ रकम न कोई ली जावे ॥ २४ ॥
फौजदार तहसीलदारो को था हुक्म ये थानेदारो को।
किसी तरह का कष्ट न होने पावे काश्तकारो को ॥ २५ ॥

---

*सन् १६७६ ई०

सख्ती, तंगी, जबरन की जो किसी ने आ दरख्वास्त दिया ।
सुनी शिकायत जिस नौकर की फौरन ही बरखास्त किया ॥ २६ ॥
इसी समय की मुग़ल-राज्य की घटना एक सुनाते हैं ।
शाहंशाह थे शाहजहाँ जब तब का हाल बताते हैं ॥ २७ ॥
एक दिन शाहंशाह ने सारे कागज़ात थे मँगवाये ।
माल मुतल्लिक कागज़ात को अपनी जाँच में वह लाये ॥ २८ ॥
एक गाँव की वसूलयाबी शाही जाँच में जब आई ।
पिछली मालगुज़ारी से वो कई हज़ार ज्यादा पाई ॥ २९ ॥

दोहा

लेकिन लालच ने नहीं, कीना वहाँ मुकाम ।
अब जैसे दीवान को दीना नहीं इनाम ॥

छन्द

वहीं रुक गये बादशाह चहरे का रंग निराला था ।
तलब किया सदुल्लाखाँ को जो दीवानेआला था ॥ ३० ॥
पूछा बादशाह ने उससे, "हुआ हुक्म कब जारी ये ।
अब के इतनी किस कारण से बढ़ गई मालगुज़ारी ये" ॥ ३१ ॥
इस साल गाँव के दरिया ने पीछे हट रकबा छोड़ दिया ।
ज्यादा हुआ वसूल इसीसे सादुल्ला ने अर्ज़ किया ॥ ३२ ॥
"माफी के पास की यह ज़मीन थी"—यह जाना तब चिल्लाकर ।
शाहंशाह सादुल्लाखाँ से बोला रिस में झल्ला कर ॥३३॥

इस जमीन के पास अगर है वह जमीन जो माफ़ी है ।
फिर तो इसका लगान लेना बिल्कुल बे इन्साफ़ी है ॥ ३४ ॥
यहाँ की विधवाओं और अनाथ दीनों की आहोज़ारी पर।
इस जमीन का पानी सूखा था उनकी लाचारी पर ॥ ३५ ॥
यह थी उनको देन खुदा की इससे था उनका जीना ।
गुनहगार हो राज्य के लिए तुमने उसको क्यों छीना ॥ ३६ ॥

गज़ल

दीनों पै रहम करने ही इन्सान याँ हुआ ।
तुम ने भुलाया फर्ज को इन्साफ क्या हुआ ॥१॥
जुल्मो-ज़बर का करना ये शैतान का है काम ।
वह ही तुम्हारी अक़्ल पर परदा पड़ा हुआ ॥२॥
किया खुदा के ग़ज़ब का भी खौफ़ कुछ नहीं ।
दिल गुनाहों में तेरा ऐसा फँसा हुआ ॥३॥
ताकीद थी न जुल्म हो हरगिज़ ग़रीब पर ।
अफ़सोस तेरी अक़्ल को क्या जाने क्या हुआ ॥४॥

छन्द

अगर खुदा के बन्दों के हित मुझसे दया नहीं होती ।
तो उस जालिम फौजदार को फाँसी आज यहीं होती ॥ ३७ ॥
अब केवल बरखास्त ही करना काफी उसे सज़ा होगी ।
ताकि दूसरों को आगाही आयन्दा न कज़ा होगी ॥ ३८ ॥

जितना ज्यादा लगान आया वह हिसाब सब समझा दो ।
जिन-जिन से वसूल हुआ है फौरन उसको लौटा दो ॥ ३९ ॥
"निर्भय" कैसे थे इन्साफ़ी पूर्व काल के शासक ये ।
अब का अजब रवैया कैसा है किसान का नाशक ये ॥ ४० ॥

दोहा

मुहर रुपे के फ़र्क हैं तब और अब के राज ।
तब किसान सुख भोगते, अब दुख रहे बिराज ॥

---

(१५)

किसान पन्थ

सवैया

धंधे सबै विस्मार किये,
"निरभै" दुख दै धन धाम हखारे ।
लै गई ढोय विलायत ही सब
भारत लूटि खजानौ भखौ रे ॥
तंग तबाह की आह भरैं हम
बोधे रवैया ने नाश कखो रे ॥
स्वारथ-अन्ध अनीति करैं नित
चाहें किसान तो भार परखो रे ॥

दोहा

स्वारथ मे अंधे हुए अब के नौकर शाह ।
चाहे हम भूखे मरें इनको क्या परवाह ॥१॥
भूखे-नंगे रहि सहे अत्याचार महान ।
आज-काल में सब तरह, रहते दुखी किसान ॥२॥

छन्द

उनको रुपये से मतलब है, चाहें नित काल-दुकाल परैं ।
नही किसानों की परवा है भूखे चाहे बिन काल मरैं ॥ १ ॥
लूट-लूट कर माल हमारा और सभी ले जाते हैं ।
हम निशि-दिन की मिहनत पर भी सदा दु:ख ही पाते हैं ॥ २ ॥
हम बरबाद हो गये जब से अजब रवैया आया है ।
सभी तरह से हमें लूटने पूरा जाल बिछाया है ॥ ३ ॥
बरबादी से बचना चाहो जोर-जुलम अन्धेरो से ।
जानो माल की चाहो हिफाजत अपना अगर लुटेरो से ॥ ४ ॥

दोहा

अरु चाहो आनन्द सुख, हो दुख का अवसान ।
करो यतन इस देश में, चाले पन्थ किसान ॥

छन्द

पन्थो के इस मुल्क हिन्द में, किसान-पन्थ भी चल जावे ।
हो संगठन किसानों का वो जिससे दुनियाँ हिल जावे ॥ ५ ॥

गाँव-गाँव में बास करे इस पन्थ का होहि पुजारी जो ।
"बाबा किसान-दास" कहलावे सब का सेवाकारी जो ॥ ६ ॥

हर गाँव में एक किसान-कुटी हो प्रचारक शुद्ध सचाई की ।
उसमें मन्दिर, तहँ मूर्ति रहे धरती-माँ, भारत-माई की ॥ ७ ॥

पूजा करे पुजारी नित प्रति पूजनीय जग-त्राता की ।
श्रद्धा, भक्ति समेत उतारे दिव्य आरती माता की ॥ ८ ॥

उसी कुटी मे किसान सेवक रहकर मगन निवास करें ।
टुकड़े माँगि करै नित भोजन और न कोई आस करें ॥ ९ ॥

निस्स्वार्थ निर्वैर सभी से राग-द्वेष का त्याग करें ।
लगे रहें कर्त्तव्य-कर्म में फल से सदा विराग करें ॥१०॥

अपना सर्वस प्रिय जीवन तक उनके हेतु निसार करें ।
सदा ईश से यही विनय हो—कृषकों का उद्धार करें ॥११॥

रात-दिना बस बाबा उनकी सोचै बात भलाई की ।
उन्हें पढ़ावें शिक्षा दें सिखलावें रहन सफाई की ॥१२॥

उनका दृढ़ संगठन करें अरु मिल कर रहना सिखलावें ।
खद्दर की महिमा समझा कर घर-घर चरखा चलवावें ॥१३॥

पूरी करें जरूरत उनकी रहैं तयार हिमायत को ।
पूरी कोशिश कर के उनकी कर दें दूर शिकायत को ॥१४॥

दोहा

पुलिस, अदालत, बोहरे, मुखिया, नम्बरदार ।
करने कोई पावै नहीं उन पर अत्याचार ॥

छन्द

सुखकारी इस किसान-पन्थ का नियमित एक कर्म होवे ।
गाँव-गाँव में किसान-सभा का होना मुख्य धर्म होवे ॥१५॥
हर किसान हो मैम्बर उसका फर्ज ये वृद्ध जवानों का ।
सभा की आज्ञा पालन करना हो यह धर्म किसानों को ॥१६॥
जो किसान मैम्बर न बने जो गाँव सभा नहीं बनवावे ।
वह किसान और वही गाँव बस धर्म-विमुख समझा जावे ॥१७॥
किसान-पन्थ के धर्म-मुताविक सभा गाँव प्रति बन जावे ।
गाँव-गाँव में कथा वचे कर्त्तव्य किसाननु सिखलावे ॥१८॥

किसानों का कर्त्तव्य

कभी न पहनो वस्त्र विदेशी देकर आग जलाओ तुम ।
घरू शुद्ध खद्दर ही पहनो चरखा-चक्र चलाओ तुम ॥१९॥
ब्याह-काज में फिजूल-खर्ची बिल्कुल बन्द कराओ तुम ।
कभी न झूठी देहु गवाही सत्य पन्थ अपनाओ तुम ॥२०॥
घर-घर में और गाँव-गाँव में किसान-पन्थ गुन गाओ तुम ।
[illegible]र-भाव और फूट-कुमति ये सब को दूर भगाओ तुम ॥२१॥

आपस में कर मेल सुमति से दृढ़ संगठन दिखाओ तुम ।
गाँव-गाँव में निर्भय होकर किसान-सभायें बनाओ तुम ॥२२॥
अपने अनजान भाइयो को नित हित की बात बताओ तुम ।
किसान सभा के मैम्बर बनकर अपने दुःख मिटाओ तुम ॥२३॥
सहो कभी ना जुल्म किसी के, रिश्वत नहीं खिलाओ तुम ।
कायरता, दब्बूपन छोड़ो 'वीर-किसान' कहाओ तुम ॥२४॥
इस प्रकार से किसान-बाबा निज कर्त्तव्य निभा लेवें ।
भूमि और नभ-मंडल तक में अपनी धूम मचा देवें ॥२५॥

भविष्य

गांव-गांव मे गूँज उठे तब—"बाबा दास अनूठे हैं—
सच्चा पन्थ किसानों का है और पन्थ सब झूठे हैं" ॥२६॥
जिस दिन "निर्भय" इसी तरह दृढ़ काम किसानों का होगा।
निश्चय है बस उसी दिवस उद्धार किसानों का होगा ॥२७॥
साम्यवाद गूँजे, आपस में प्यार किसानों का होगा ।
पड़ा दुःख सागर में बेड़ा पार किसानों का होगा ॥२८॥
चलेगा पन्थ किसानों का शुभ भाग्य किसानों का होगा ।
अवतार किसान-दास होगा उद्धार किसानों का होगा ॥२९॥
अपने अन्न-कमाई पर अधिकार किसानों का होगा ।
हैं किसान ही पृथ्वी-पति गुंजार किसानों का होगा ॥३०॥

फिर भारत-भू-मंडल पर साम्राज्य किसानों का होगा ।
अधिकार किसानों का होगा, संसार किसानों का होगा ॥३१॥

---

(१६)

किसान-पन्थ का परिणाम

दोहा

हरे-भरे सब दिन रहो,—सुख-सम्पत्ति की खान ।
मान लिया यदि आपने, सुख-प्रद पन्थ-किसान ॥

भजन

तुमने मानलिया, यदि सुखप्रद पन्थ-किसान ॥टेक॥
गलकर बीज वृक्ष होता है जानत सभी किसान ।
इसी भाँति भारत-माता-हित कर दो निज बलिदान ॥
सुपथ पहिचान लिया ॥ तुमने मान० ॥१॥
जो तुम पर निशि-दिन करते हैं अत्याचार महान ।
पूंजीपति, नौकरशाही का मिटि जाइ नाम-निशान ॥
सुदृढ़ प्रण ठान लिया ॥ तुमने मान० ॥२॥
ऊँच-नीच का भेद मिटे सब बहे प्रेम की धार ।
साम्यवाद गूँजे भारत में सब के सम अधिकार ॥
रहेंगे जान लिया ॥ तुमने मान० ॥३॥

उत्साही साहसी वनोगे "निर्भय" तुम वलवान ।
'काले कुली गँवार' रहो ना करे विश्व सम्मान ॥
तत्व यह छान लिया ॥ तुमने मान० ॥४॥

---

(१७)

फूट का दुष्परिणाम

दोहा

वने बिगाड़े कुमति ने, देखे सब इतिहास ।
घर में वैर वसाइके, अपना किया विनास ॥

भजन

दुःख कहु किसने नहिं पाया, भाई कर आपस में वैर ॥टेक॥
रावण ने मत बुरा विचारा—भ्रात विभीषण को फटकारा ।
वना वनाया खेल बिगारा ।
लंक गढ़ अपना जलवाया—और रही न कुल की खैर ॥दु०॥१
वाली ने सुग्रीव निकारा—गया राम के शर से मारा ।
महाभारत भी खूब निहारा ।
नाश दुर्योधन करवाया—गई घर में जंग की ठैर ॥दु०॥२
जयचँद कौमी नमक हरामी—परदेशिन की करी सलामी ।
भारत के सिर दई गुलामी ।
दुष्ट ने कैसा गजब ढाया—जाने घर में घुसाइ लिये गैर ॥दु०॥३

रही-सही जो बात हमारी—मानसिंह ने ऐन बिगारी ।
सभी तरह करवाई ख्वारी ।
बुरे दिन भारत पर लाया—जाने दे दिया सब को ज़हेर ॥दु०॥४
सोच-समझ लो किसान भाई—फूट कुमति दे नाश कराई ।
और न कछु जा ते दुखदाई ।
धूलि में मिलि जइहै काया—भाई सुमती क्रिये बगैर ॥दु०॥५

---

(१८)

सुमति

दोहा

शत्रु-शालिनी विजयिनी बाधा विघन हटाइ ।
वीरों को सुखदायिनी सुमती दई बनाइ ॥

भजन

वीरों को सुखदा सुमति बताई है ।
असफलता का रोग भगाती अजब दवाई है ॥टेक॥
जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना तुलसिदास ने बतलाया ।
वेद, पुरान, धर्म-ग्रन्थों में सब मे यही पता पाया ॥

छान-बीन कर जितनी देखी ईश्वर की विस्तृत माया।
चार पदारथ देनेवाली देखा अपनी ही काया॥
पूर्वजो के इतिहास देख लिये सब में यही पता पाया।
राजनीति सामाजिक देखी यहाँ भी वही नजर आया॥
रात-दिना की वस्तु बरतनी सब में यही पता पाया।
सब के अन्दर देखा-भाला सब में मिली एक छाया॥
सब के सुक्ख सफलता-साधन-सुमति-सचाई है॥ वीरो को०॥१॥

प्रथम ईश की माया पर हो सोचैं सज्जन ध्यान धरैं।
ब्रह्म, प्रकृती, जीव जगत के रचने का सामान करै॥
पाँच तत्व गुन तीनि प्रेम सों सब ही एक मिलान करैं।
रचै जगत औ चले नियम से सब सुमती का गान करैं॥
अपना-अपना काम सुमति से सदा चन्द्र और भान करैं।
देखो अद्भुत खेल सुमति के विजयी का सर्व मान करै॥
ईश्वर की रचना-रचना में सुमति समाई है॥ वीरो को०॥२॥

अपनी इस काया को देखो जिसमें सब आराम करै।
हाथ-पाँव इन्द्री सब पुरजा सदा सुमति से काम करै॥
कोई भी जो कुमति कमावै आलस और हराम करैं।
उसी वक्त हो शरीर रोगी औरों को बदनाम करैं॥
फिर भी एक सूत में होकर बन्दोबस्त तमाम कर
सब शरीर हो सुखी आत्मा मुक्ती धाम मुकाम करै।

सब विधि कर दे अचल ये सो दृढ़ताई है ॥ वीरों को० ॥३॥
इतिहासों पर नज़र करो अब पहले से अब तक भाई ॥
रामचन्द्र थे चार भ्रात तुम देखो उनकी एकताई ।
राज त्यागि बन में दोउ भाइनु जीता रावन बलदाई ॥
पांडव पांच सुमति के संगी चक्रवर्ती हुए सुखदाई ।
चार करोड़ ही अंग्रेजों की उदय-अस्त फिरती दुहाई ॥
कछुक सुमति गांधी ने साधी गया शोर जग मे छाई ।
नीचे से ऊंचा हो चमके ये प्रभुताई है ॥ वीरों को० ॥४॥
अपने-अपने काम रोज़ के ही पर गौर करो, प्यारे ।
एक सुमति स्वर के बिन होते बिगड़ जात गाने सारे ॥
निरी ईंट की भींति न बनती बिना लगे सुमती गारे ।
नराहुली सुमती के बिन ही हल-जूआ रहते न्यारे ॥
सुमति गड़ैरो बुद्धि गरीली निधरक पैर चले प्यारे ।
सींक-सींक बँधि सुमति डोर से शुद्ध करे घर सुखकारे ॥
तृण-तृण से हो रस्सा सुमति का बँध जाते गज मतवारे ।
मिले सुमति से विजय शत्रु पर बजैं जीत के नक्कारे ॥
निर्धन होकर विचरैं जिनने ये अपनाई है ॥ वीरों को० ॥५॥
ये सब बातें सोच समझ लो मेरे तुम किसान भाई ।
फूट कुमति सब दूर भगादो सुमति गहो अति सुखदाई ॥
दृढ़ संगठन करो तुम मिलकर यही मन्त्र है बलदाई ।

दुख, दारिद्र, अनीतों पर तुम निश्चय लेहु विजय पाई ॥
निज अधिकारों के अधिकारी होहु, भीरुता मिटि जाई ।
'निर्भय' कहे स्वराज्य मिलेगा करो भरोसा दृढ़ताई ॥
असम्भव को सम्भव कर देती सो फलदाई है ॥ वीरो को०॥६॥

---

(१९)

किसानों का इरादा

गज़ल

किसानो को हक़ पै फ़िदा देख लेना ।
आज़ादी के सारे समाँ देख लेना ॥ १ ॥
खड़े होंगे अपने ही पैरों के बल पर ।
रहेंगे न ज़ेरे जहाँ देख लेना ॥ २ ॥
करके दिखा देंगे अपनी तरक्क़ी ।
कि पहले जहाँ थे वहाँ देख लेना ॥ ३ ॥
हुआ कांग्रेस का मुखिया 'जवाहर' ।
किसानों की अबके अदा देख लेना ॥ ४ ॥
कमाई न देंगे विदेशों को अपनी ।
वो ज़ालिम के तीरो कमाँ देख लेना ॥ ५ ॥

जलाकर विदेशी को पहनेंगे खद्दर ।
मैन्चैस्टर के उजड़े मकाँ देख लेना ॥ ६ ॥

रही फूलती और फलती जो हमसे ।
विलायत में अब के खिजाँ देख लेना ॥ ७ ॥

करें संगठन हम बढ़ावेंगे जुरंत ।
तो जल्दी ये होंगे बिदा देख लेना ॥ ८ ॥

'निर्भय' किसानो के दिल का इरादा ।
गुलामी से हमको रिहा देख लेना ॥ ९ ॥

---

(२०)

किसानों का निश्चय

ग़ज़ल

हम हैं जमी पर तुम रहना फ़लक पर ।
आखिर हमीं होंगे रोशन खलक़ पर ॥ १ ॥

हरगिज़ रुकेंगे न रोके किसी के ।
मशीनें लगादो हमारे हलक़ पर ॥ २ ॥

गुनाहों की खेती है जुल्मों का सहना ।
सीखा है मरना किसानो ने हक़ पर ॥ ३ ॥

बेकार होंगे ये तोपो-तमंचा।
हमें तो भरोसा है अपने सबक़ पर॥ ४ ॥
ज़ालिम समझ ले है पलटा ज़माना।
ग़लती न खाना तू उलटी बहक पर॥ ५ ॥
'निर्भय' ये ज़ालिम मिटेंगे जहाँ से।
हमीं हों ज़मीं पर हमीं हों फ़लक़ पर॥ ६ ॥

---

(२१)

ना समझ सजनी

दोहा

प्रीतम के प्रतिकूल चलि, करती हो अपवात।
क्यों सजनी बौरी भई, करे अनहोनी बात॥

तर्ज गारी

क्यों करै अन होनी बात, समझि नेंक हरे-हरे समझि नेंक एरी सजनी॥ टेक॥
तुम्हरे प्रीतम नाज कमावें मिहनत करें अपार।
करौ पीसनौ तक हू तुमना पीसति चून चमार॥
आलसी निकम्मीं बनी॥ क्यों करै० ॥ १ ॥

बड़ी मुसीबत ते पिउ तेरे पैदा करें कपास ।
तुम चरखा तक हू नहिं कातौ करति बिरानी आस ॥
अक़ल की हो ऐसी धनी ॥ क्यों करै० ॥ २ ॥
पिया तुम्हारे खद्दर पहनें मोटी घरू बुनाइ ।
ठेठि विलायत की तुम झीनी साड़ी लेति मँगाइ ॥
शरम सब खोई अपनी ॥ क्यों करै० ॥ ३ ॥
देश-भक्त सब के हितकारी प्रीतम पूज्य तुम्हार ।
ऐसे साजन छोड़ि निगोड़ी पूजति मियाँ-मदार ॥
कुमति तेरे ऐसी ठनी ॥ क्यों करै० ॥ ४ ॥
पति के हित में हितु है तेरौ डारि कुमति पै धूरि ।
'निर्भय' पति अनुकूल चलौ तो सब दुख है जाहिं दूरि ॥
सदा रहो सुमति सनी ॥ क्यों करै० ॥ ५ ॥

---

(२२)

समझदार सजनी

रसिया

मैं तो करूँगी स्वदेशी सों प्यार सजन मोहि खादी की चुदरिया
लाइ दीजो ॥ टेक ॥
वस्त्र-विदेशी ना पहरूँ—इनहुँ को देहुँ पजार ॥ सजन० ॥ १ ॥

घर बनौरे खेत में—वइ देउ बीघाचार ॥ सजन० ॥ २ ॥
चरखा कातूँ प्रेम सों—काढूँगो नहनौ तार ॥ सजन० ॥ ३ ॥
हम-तुम पहनें खद्दरा—घर ही में करें बुनार ॥ सजन० ॥ ४ ॥
देश गुलामी सों छूटै—'निर्भय' होहि उद्धार ॥ सजन० ॥ ५ ॥

(२३)

रसिया

पहनौं पहनौंगी स्वदेशी चीर, ननद मेरे अँगना में करघा लगाइ दीजो ॥ टेक ॥
करघा की शोभा तब रहै—बुनें आप तेरे वीर ॥ ननद० ॥ १ ॥
दिनभरि चरखा कातौंगी—गाऊँगी स्वदेशी गीत ॥ ननद० ॥ २ ॥
सुनि चरखा की रागिनी—उठेगी विदेशी के पीर ॥ ननद० ॥ ३ ॥
लंकाशायर सिरधुनै—लेहिं न विदेशी की चीर ॥ ननद० ॥ ४ ॥
चरखा यन्त्र स्वराज कौ—'निर्भय' मिटि जाइ भीर ॥ ननद० ॥ ५ ॥

(२४)

स्वराज-प्रिया-सजनी

रसिया

हम लेहिगे वेगि स्वराज, सजन मेरे गाँधीजी को मारग गहि
लीजे ॥ टेक ॥

त्यागौ वस्त्र विदेश कौ—
(होहि) सब खद्दर कौ साज ॥ सजन मेरे ॥ १ ॥
हिल-मिल के सबसों रहो—
सब के सम अधिकार ॥ सजन मेरे ॥ २ ॥
जा अंगरेजी राज सों—
असहयोग लेउ धार ॥ सजन मेरे ॥ ३ ॥
'निर्भय' नौकरशाही सों—
सत्याग्रह देउ ठान ॥ सजन मेरे ॥ ४ ॥

(२५)

आहता

रसिया

जीओ जीओगी तो करोगी निहाल, वैद मेरे जियरा की
जरनि मिटाइ दीजे ॥ टेक ॥

जो परदेशी राज सों—
होत करेजा में साल ॥ वैद मेरे० ॥ १ ॥

देश पै दास जतीन से—
कीयौ है वीर-बलिदान ॥ वैद मेरे० ॥ २ ॥

दत्त-भगत से बाँकुरे—
सहि रहे दुक्ख महान ॥ वैद मेरे० ॥ ३ ॥

"निरभै" लखि-लखि दुरदशा—
हियरा में धधकति आग ॥ वैद मेरे० ॥ ४ ॥

(२६)

वीर युवती

रसिया

छुड़ाओ दुख-बन्धन ते पिया—अपनो भारत देश ॥ टेक ॥

जब तक भारत अपनो न होगो—बाँधू न सिर के केश ॥छुड़ाओ०॥१॥

भारत पर दीवाने है जाउ—धरि योगी को वेश ॥छुड़ाओ०॥२॥

जेल होहि चाहि फाँसी है जाउ—कितने हु सहौ कलेश॥छुड़ाओ०॥३॥

हम-तुम 'निरभै' मरैं देश पै—कीरति रहे हमेश ॥छुड़ाओ०॥४॥

---

(२७)

किसान-पन्थ का महत्व

रसिया

और सब झूठौ है—पिया सांचो हैं पन्थ किसान ॥ टेक ॥

अब हमरी मिट जाइ गरीबी—सुख ते करें गुजरान ॥और सब०॥१॥

खून के प्यासे वजमारेनु के—मिटि जाहिं नाम-निशान॥और सब०॥२॥

वेगि सभा के मैम्बर है जाउ—जो सब सुख की खानि॥और सब०॥३॥

करि संगठन किसान भले में—करि देउ अर्पण प्रान॥और सब०॥४॥

'निर्भय' करतब पै मरि मिटियौ—तब ही रहेगी शान॥और सब०॥५॥

---

(२८)

राजा--प्रजा

दोहा

दूध न्हाइ फूलैं फलैं सुखते रहैं किसान।
सच्चा वही स्वराज्य हो, दुख का हो न निशान॥

भजन जिकड़ी

छन्द

राज-नीति का धर्म यही है नीति-शास्त्र यह बतलाता।
राजा-परजा रहे प्रेम से जैसे पुत्र-पिता-माता॥
जैसे भानु महीतल से जब जल-समूह को ले जाता।
बादल बना-बनाकर उसको सबके हित को बरसाता॥
इसी तरह से द्रव्य प्रजा का प्रजा के हित ही में लाता।
'निर्भय' कहे वही है भूपति प्रजा का जो सब विधि त्राता॥

गाथौ

जुग-जुग की यह रीति और सब वेद बखानैं।
प्रजा-पुत्र-सम कही पिता भूपति को मानैं॥
यही राजन की नीति, अपने सुनते हू अधिक, करें प्रजा पर प्रीति।
करें प्रजा पर प्रीति, धर्म की नीति, रहै नहि देश दुखारो॥

आप दुक्ख सहि लेइ, प्रजै नहिं देइ, वेद की बात विचारो।
पावै प्रजा कलेश, जाके खोटे राज में, भोगे नरक नरेश॥
भारत देश दुखी भयो भारी अंग्रेजी शासन हत्यारो।

(२९)

भारत भयो देश दुखारो

करि-करि याद पिछारी रोवैं।

हरिश्चन्द्र ने धर्म राखिवे, दारा, तात तजी घरनी।
रामचन्द्र ध्वज के कहिवे पै घर ते काढ़ि दई घरनी॥
धर्म कौ पूत युधिष्ठिर राजा करि रह्यौ स्वर्ग उजारो।
भारत भयौ० ॥ १ ॥ अब के भूप न धर्म विचारैं॥
कृष्ण-दुलारी माखनवारी काटत गऊ हजारन को।
इन ही के पूत कमाइ के पालैं सूझति नाहिं भतवारेन को॥
सुक्ख हमारे की जड़ काटैं इनते को हत्यारौ।
भारत भयौ० ॥ २ ॥ करि दयौ देश दुखी इन भारी॥
शीत न घाम गिनैं चौमासे भूखे-प्यासे काम करैं।
चली कमाई सब विदेश को कैसे दुखिया धीर धरैं॥
रोवै लाल गोद बिरहुलि की कैसे करें गुजारौ।
भारत भयौ० ॥ ३ ॥ तीस कोटि जनता भारत की॥
सात करोड़ रहे नित भूखे दुखिया भारत के वासी।
अगिनि सहारे रात बितावैं अब तो सोचो अविनासी॥

अब नहीं सहे जात दुख स्वामी तेरो लयौ सहारो।
भारत भयो० ॥ ४ ॥ करि करुणा अब वेगि निहारो ॥
हरिबे दुख दीननु कें भेजे गांधी करि करुणा भारी।
लेहि स्वराज्य किसान सुखी होहिं ऐसी करि मगलकारी ॥
"निर्भय" सुखी स्वतंत्र वेगि ही है जाहि देश हमारो ।
भारत भयौ देश दुखारो ॥ ५ ॥

(३०)

किसान-प्रार्थना

दोहा

दीनबन्धु करुणानिधे कृषकों के भगवान।
'निर्भय' शीघ्र ही मुक्त हो. दुख से सभी किसान॥

छन्द

दीन-कृषको के हे भगवान।
मुक्त हो दुख से सभी किसान ॥
शरण हम तुम्हारी है सर्वेश-मिटाने होगे सर्व कलेश।
देहु दृढ़ साहस जगदाधार-सहे न किसी के अत्याचार ॥

सुमति का हममें हो संचार—करें संगठन फूट को क्षार।
हृदय में हो अदम्य उत्साह—देश-हित मर-मिटने की चाह ॥
सिखा दो हमें आत्म-बलिदान।
दीनों कृषकों के हे भगवान ॥१॥

सिखादो प्रभुवर! ऐसा मन्त्र—रहें हम कभी नहीं परतन्त्र।
सुना दो हम को गीता-ज्ञान—होहिं निज करतब पर बलिदान॥
गूँज यह जावे हे विश्वेश—किसानों का है भारत-देश।
किसानों ही का है संसार—'निर्भय' हो स्वतन्त्रता-जयकार॥
और हो हम सब का कल्यान।
दीन कृषकों के हे भगवान ॥२॥

---

(३१)

भारतमाता की आरती

आरति श्री भारत-जननी की।
कीरति कलित ललित प्रिय-ही की॥

अन्न-पूर्णा मातु हमारी।
सुख दायिनि शुचि मंगलकारी॥
विश्व-भरणि दुख-नाशन-हारी—शुभ्र-ज्योतिमय जीवन जी की।
आरति श्री भारत-जननी की॥२॥

गंग, यमुन बहे पावन धारा।
हिमगिरि विशद विभव विस्तारा॥
रत्नाकर वर सिन्धु तुम्हारा—सुफल मनोरथ खानि अमी की।
आरति श्री भारत जननी की॥२॥

तीस कोटि सुत तेरे त्राता।
कौन कहे तोहि अबला माता॥
भारत तुम पर बलि-बलि जाता—सर्वस प्राण किसानन ही की।
आरति श्री भारत जननी की॥३॥

जय दुर्गे, जय शक्ति भवानी।
रिपु-दल-दलनि जयति रुद्रानी॥

'निर्भय' नमामि वीर-वरदानी—जय-जय विजय-आश जगती की।

आरति श्री भारत जननी की ॥

कीरति कलित ललित प्रिय ही की ॥४॥

सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर में मुद्रित ।

भारतवर्ष की सब से सस्ती

और

राष्ट्रीय

जीवन, जागृति, बल और बलिदान की पत्रिका

'त्यागभूमि'

संपादक

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

तथा

सस्ता-मण्डल

का

बलप्रद, शिक्षाप्रद, ज्ञान-वर्धक

और

क्रान्तिकारी साहित्य पढ़िए।

सस्ता-साहित्य-मण्डल अजमेर।

मुद्रक जीतमल लूणिया सस्ता-साहित्य प्रेस, अजमेर।